आलस्य और अलबेलापन - 54

➢ **<u>मैं सर्वश्रेष्ठ भाग्यशाली आत्मा हूं</u>**

➳_ ➳ **संगमयुग में मैं सर्वश्रेष्ठ भाग्यशाली आत्मा हूं**

→ **स्वयं भगवान ने इस धरा पर आकर मुझ आत्मा को चुना है..**

→ **मैं कितना भाग्यशाली आत्मा हूं...**

→ स्वयं भगवान बाप ने अपने बांहों मे समा लिया...

- आह!! ये कितना लवलीन अवस्था है...
- मैं तो जगह जगह ढूंढ रहा था कहां कहां भटक रहा था...
- **<u>स्वयं बाप ने अपना बच्चा बनाकर दिल खुश कर दिया..</u>**

▶ मीठे बाबा मैं कितने **मुसीबतों** मे... आपने **सहारा दिया...**

▶ मै विकारों के **बंधन मे जकड़े हुआ** था...

▶ आपने **सहारा देकर मुझ आत्मा को विकारो से जाने मे बचा लिया...**

➳_ ➳ **मैं कितना दिल से आपको शुक्रिया करूं... बाबा आप कितना हमें हर रोज वरदानो से आपके महावाक्यों से हमारा जीवन को ही पलट दिया इस संगम पर अहो सौभाग्य!!**

→ सचमुच बाबा हम आपको जानते ही नही थे...

→ हमारे अंदर कोई इतना मूल्य नही था...

→ **आप अपना बनाकर मूल्यवान हीरा बना दिया...**

- **हम धन्य धन्य हो गए...**
- आपने हमारे अंदर ऐसे शक्ति भरा एक जगह पर बैठ पूरे विश्व को शांति की शक्ति की किरणे दे रहे है...

▶ बाबा बस ऐसी लवलीन अवस्था मे ही समा जाए...

→ ऐसे लगता है बाबा का कितना गुण गाऊं मैं क्या नही कहूं क्या करूं...

→ ऐसे लवली बाबा को मन ही मन दिल ही दिल शुक्रिया का गीत गाता रहूं यही मन में आ रहा था...

- बाबा आपकी छत्रछाया के नीच मैं निश्चिंत आत्मा हूं...
- यही दिल से निकल रहा था **<u>बाबा आप जो कहेंगे मैं आत्मा करके दिखाऊँगा...</u>**
- ऐसे मीठे मीठे बाबा से दिल ही दिल वायदा कर रहा था...

▶ बाबा ने मुझ आत्मा पर वरदानी हाथ रखा...

▶ मीठे बच्चे जाओ इस संगमयुग में मेरे सभी बच्चों को जगाओ...

- ऐसा वरदान पाकर मै दिल ही दिल प्रफुल्लित हो रहा था...